Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

देववाणी-संस्कृतम्

द्वितीयः सर्गः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

देववाणी-संस्कृतम्

द्वितीयः सर्गः

सम्पादकमण्डलम्

- प्रा० प्रभाकर जोशी
- नन्द किशोर दीक्षित
- ताराचन्द्र शर्मा शास्त्री
- डा० उत्तम चन्द्र शास्त्री
- रामप्रकाश पैन्यूली शास्त्री
- कौशल किशोर पाण्डेय

प्रकाशकः

शिक्षा मन्दिर प्रकाशन
लाल दरवाजा, कृष्णगंगा
मथुरा (उ०प्र०)

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान के सौजन्य से प्रकाशित

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रकाशकः---

शिक्षा मन्दिर प्रकाशन
लाल दरवाजा, कृष्णगंगा
मथुरा-२८१००१

वर्ष प्रतिपदा युगाब्द ५०९७
विक्रम संवत् २०५२
ई० सन् १९९६

मुद्रकः--

ग्राफिक आर्ट प्रिन्टर्स
डीग गेट,मथुरा (उ०प्र०)

पुस्तक प्राप्ति स्थान

शिक्षा मन्दिर प्रकाशन
लाल दरवाजा, कृष्णगंगा
मथुरा (उ०प्र०)२८१००१

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

मूल्य छः रुपए

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आचार्यों से निवेदन

विद्याभारती ने जिन पाँच विषयों को राष्ट्रीय पाठ्यक्रम के रूप में अपनाया है, उनमें संस्कृत भी मुख्य विषय है। संस्कृत को व्यावहारिक एवं लोक-भाषा बनाने का प्रयास 'विद्याभारती' निरन्तर करती आ रही है। पारम्परिक शिक्षण-विधि के स्थान पर संभाषणविधि विकसित हो सके इसी दृष्टि से 'देववाणी संस्कृतम्'' पुस्तक का चार भागों में प्रकाशन किया गया है।

व्याकरण केन्द्रित शिक्षण से हटकर छात्र अपने विचारों को सरल संस्कृत वाक्यों में व्यक्त कर सकें यह प्रस्तुत पुस्तक का लक्ष्य है। पुस्तक में दिये हुए वाक्य पढ़ना, उसका अनुवाद समझना और व्याकरण के नियमों को कहना, सामान्यतः संस्कृत-शिक्षण का यही आधार सभी स्थानों पर रहता आया है। पाठ में जो विषय दिये गये हैं उन्हें तर्क से समझकर तथा उसके विभिन्न पहलुओं पर विचार करते हुए उसी तरह कुछ और वाक्यों की रचना छात्र स्वयं कर सकें यह अपेक्षित है। साथ ही छात्रों के मन में संस्कृतभाषा के प्रति रुचि उत्पन्न करना है। इस दृष्टि से पाठ शिक्षण की विभिन्न विधियाँ पाठ में रुचि उत्पन्न करने में सहायक सिद्ध होंगी। छात्रों के उत्तर में विचार, अनुमान, तर्क, तुलना आदि प्रवृत्तियों का समान रूप से ध्यान रखा जाना चाहिए। शिक्षण में नैतिक, सद्गुण वृद्धि एवं संस्कार देने वाली पाठ्य-वस्तुओं का ध्यान रखा जाना भी अभीष्ट है।

प्रस्तुत पुस्तक में बालक के व्यावहारिक एवं जीवनोपयोगी विषयों को ही लिया गया है। इसमें संस्कारक्षम कथा, लघुगीत, सुभाषित श्लोक एवं सूक्तियाँ भी जोड़ दी गईं हैं। ये बालकों को स्मरण हों यह सर्वदा प्रयास किया जाना चाहिए।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पाठ्य पुस्तक संभाषण विधि में आधारमात्र है। संभाषण में व्यावहारिक वाक्यों का ही विस्तार किया जाना चाहिए। जैसे – एषः वृषभः, वृषभः हलं कर्षति। इस वाक्य के सहारे धेनुः, बिडालः, कुक्कुरः, गजः जैसे चिरपरिचित शब्दों को लें। प्रत्येक पाठ में पाठ्यवस्तु के अतिरिक्त बोधपरीक्षण, अभ्यासकार्य, एवं शब्दकोश दिये गये हैं।

बोध-परीक्षण में बालक सक्रिय रहना चाहिए। बोध-परीक्षण में चित्रविधि का उपयोग न करते हुए छात्र उसी प्रकार विभिन्न वाक्यों का निर्माण कर सकेगा। आप सहयोगी बनकर छात्र को उत्साहित कर सकते हैं।

अभ्यासकार्य में छात्र कुछ लेखन कार्य भी कर सकेगा। ध्यान रहे लेखन कार्य में रिक्त स्थान, संस्कृत से हिन्दी अनुवाद जैसे लेखन कार्य करवायें। अभ्यास कार्य सरल रहे इसका अवश्य ध्यान रखें। *परिशिष्ट* में कठिन शब्दों के अर्थ दिये गये हैं, उन शब्दों को बालक याद कर सकें तो उनके शब्दज्ञान में वृद्धि हो सकेगी।

आपके सुझावों का सदैव स्वागत किया जायेगा। परन्तु इतना अवश्य ध्यान दें कि कक्षा में संस्कृत-संभाषण का योग्य वातावरण निर्माण किया जाए। बालक निःसंकोच संस्कृत बोल सकें, इसके लिए आचार्यों का सहयोग परमावश्यक है।

भवदीय

सम्पादक मण्डल

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

देववाणी ॐ संस्कृतम्

विषयानुक्रमणिका

पाठक्रमांकः	पाठनाम	पृष्ठसंख्याः
प्रथमः पाठः	वन्दनम्	६
द्वितीयः पाठः	सर्वनाम-प्रयोगः	८
तृतीयः पाठः	प्राणिपरिचयः	१०
चतुर्थः पाठः	मम दिनचर्या	१२
पंचमः पाठः	मम विद्यालयः	१४
षष्ठः पाठः	क्रीडाक्षेत्रम्	१६
सप्तमः पाठः	कालियमर्दनम्	१८
अष्टमः पाठः	जलचराः	२०
नवमः पाठः	अस्माकं देशः	२२
दशमः पाठः	जलचक्रम्	२४
एकादशः पाठः	निर्भयः भरतः	२६
द्वादशः पाठः	बुद्धिबलम्	२९
त्रयोदशः पाठः	कक्षा-शिष्टाचारः	३२
चतुर्दशः पाठः	स्वावलम्बी विनयः	३५
पंचदशः पाठः	गणना	३७
षोडशः पाठः	सुभाषितानि	४०

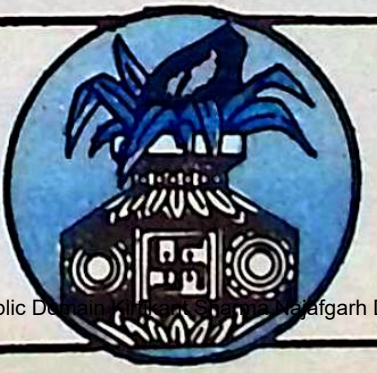

द्वितीयः सर्गः

CC0. In Public Domain. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection.

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

प्रथमः पाठः

वन्दनम्

एषः गणेशः।
अहं गणेशं नमामि।
श्रीगणेशाय नमः।

एषः गणपतिः।
अहं गणपतिं नमामि।
श्रीगणपतये नमः।

एषा शारदा।
अहं शारदां नमामि।
शारदायै नमः।

एषा सरस्वती।
अहं सरस्वतीं नमामि।
सरस्वत्यै नमः।

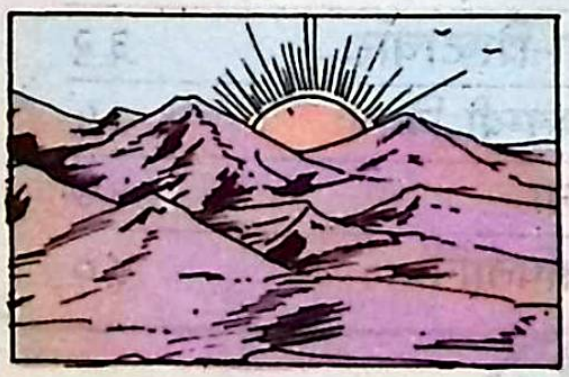

एषः सूर्यः।
अहं सूर्यं नमामि।
सूर्याय नमः।

एषः भानुः।
अहं भानुं नमामि।
भानवे नमः।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बोधपरीक्षण — कक्षाकार्य

निम्न शब्दों के उपरोक्त प्रकार के वन्दनवाक्य बनाइये।

(क) शंकरः, रामः, माधवः।

(ख) रमा, दुर्गा, गंगा।

(ग) रविः, मुनिः, हरिः।

(घ) पार्वती, जानकी, जननी।

(ङ) गुरुः, साधुः, प्रभुः।

अभ्यासकार्य

(क) ईश्वर, यमुना, ऋषि, देवकी का वन्दन वाक्य बनाकर मातृभाषा में अनुवाद लिखिये।

(ख) वाक्यों को शुद्ध करके लिखिये।

(क) अहं रामं नमः। (ख) श्रीगणपतये नमामि (ग) एषः शारदा। (घ) शारदां नमः। (ङ)अहं भानवे नमामि।

टिप्पणीः — "श्रीगणपतये नमः" = गणपति के लिए नमस्कार है। "नमः" इस अव्यय शब्द के साथ चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

द्वितीयः पाठः

सर्वनाम—प्रयोगः

(सर्वनाम शब्द के तीनों लिंगों एवं वर्तमानकाल के प्रथमपुरुष की क्रियाओं का प्रयोग)

सः बालकः अस्ति।

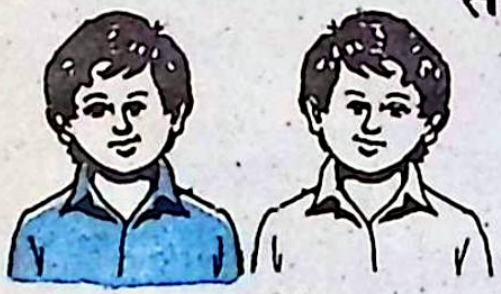

तौ बालकौ स्तः।

ते बालकाः सन्ति।

सा बालिका अस्ति।

ते बालिके स्तः।

ताः बालिकाः सन्ति।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

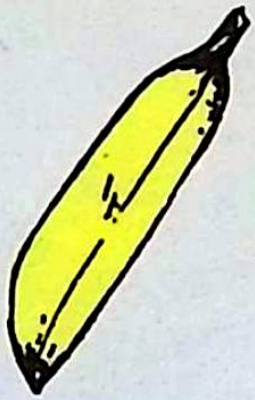
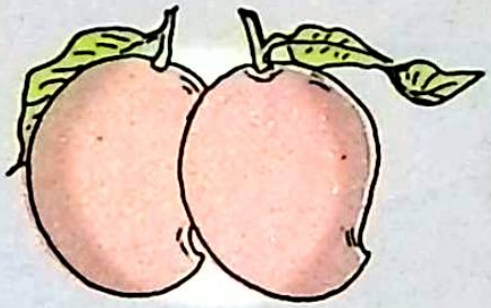
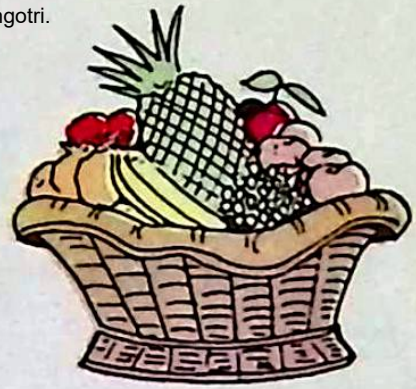

तत् फलम् अस्ति। ते फले स्तः। तानि फलानि सन्ति।

बोधपरीक्षण — कक्षाकार्य

(१) पुरुषः, महिला, पुस्तकम् इन शब्दों का तीनों वचनों में 'तत्' सर्वनाम शब्द के साथ प्रयोग करते हुए वाक्य रचना कीजिए।

अभ्यासकार्य

वाक्यों को पूर्ण करके लिखिये

(१) ——— छात्रः ———।(२) ——— पुष्पाणि ———।
(३) ——— सावित्री ———।(४) ——— मानवौ ———।
(५) ——— गृहे ———।(६) ——— लते ———।
(७) ——— वानराः ———।(८) ——— नगरम् ———।
(९) ——— छात्राः ———।

शब्दकोषः—	पुल्लिंग	स्त्रीलिंग	नपुंसकलिंग
वह	सः	सा	तत्
वे दोनों	तौ	ते	ते
वे सब	ते	ताः	तानि

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
अस्ति =है	स्तः =दो है	सन्ति =हैं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust. Foundation Delhi and eGangotri.

तृतीयः पाठः

प्राणिपरिचयः

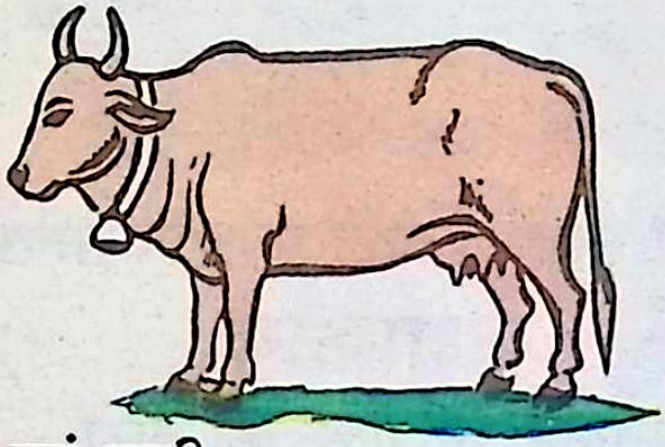

इयं का?

इयं धेनुः।

धेनुः दुग्धं यच्छति।

धेनोः दुग्धं मधुरं भवति।

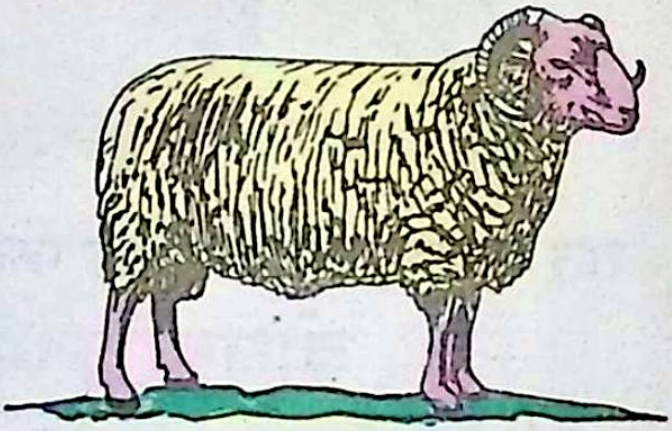

अयं कः?

अयं मेषः।

मेषः तृणं चरति।

मेषः ऊर्णं यच्छति।

अयं कः?

अयं शशकः।

शशकः तृणं चरति।

शशकः वेगेन धावति।

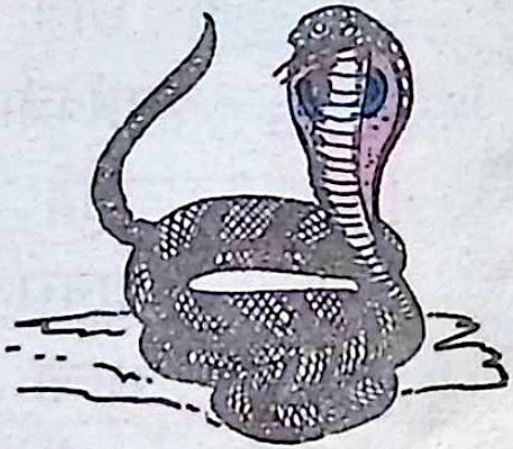

अयं कः?

अयं सर्पः।

सर्पः कृष्णवर्णः भवति।

सर्पः दशति।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बोधपरीक्षण — कक्षाकार्य

निम्न प्राणियों के सम्बन्ध में ऊपर की भाँति तीन-तीन वाक्य बनाइयेः —

महिषी, अजा, मूषकः, गर्दभः।

अभ्यासकार्य

निम्न शब्दों को परस्पर जोड़कर सार्थक वाक्य बनाकर मातृभाषा में अनुवाद लिखिये।

दशति	दुग्धं	मेषः
धावति	तृणं	सर्पः
चरति	ऊर्णं	धेनुः
भवति	कृष्णवर्णः	शशकः
यच्छति	वेगेन	महिषी

शब्दकोशः — इयं (स्त्री) =यह, धेनुः =गाय, यच्छति = देती है, अयं (पु०) =यह, मेषः =भेड़ा, तृणं =घास, चरति =खाता है या चरता है, ऊर्णं =ऊन, शशकः =खरगोश, वेगेन =तेजी से, धावति =दौड़ता है, कृष्णवर्णः =काले रंग का, दशति =डसता है, महिषी = भैंस, अजा =बकरी, मूषकः =चूहा, गर्दभः =गधा।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चतुर्थः पाठः

मम दिनचर्या

प्रातः उत्थानम्।

मातृ-पितृ-वन्दनम्।

स्नानम्।

अल्पाहारम्।

विद्यालय गमनम्।

अध्ययनम्।

क्रीडनम्।

शयनम्।

अहं प्रातः काले सत्वरं उत्तिष्ठामि। मातरं पितरं च नमामि। पश्चात् शौचं, दन्तधावनं, स्नानं च करोमि। तत्पश्चात् ईश्वरं स्मरामि। अल्पाहारं कृत्वा विद्यालयं गच्छामि। विद्यालये आचार्यान् नमामि। छात्रैः सह अध्ययनं करोमि। पूर्णावकाशानन्तरं अहं गृहं आगच्छामि। क्रीडाक्षेत्रे सायंकाले क्रीडामि। क्रीडनं शरीराय लाभदायकं भवति। रात्रिकाले अपि ईश्वरं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

स्मरामि। तदनन्तरं भोजनं करोमि। भोजनान्ते स्वाध्यायं करोमि। मम माता दुग्धं यच्छति। दुग्धं पीत्वा शयनं करोमि।

बोधपरीक्षण — कक्षाकार्य

निम्न प्रश्नों का संस्कृत में उत्तर बोलिये और मातृभाषा में अनुवाद कीजिए।

(१) त्वं कदा उत्तिष्ठसि ? (२) त्वं विद्यालयं कदा गच्छसि ?
(३) त्वं विद्यालये किं करोषि ? (४) त्वं कैः सह पठसि ?
(५) क्रीडनेन किं भवति ?

अभ्यासकार्य

निम्न वाक्यों को पूर्ण कीजिए। मातृभाषा में अनुवाद लिखिए।

(१) अहं सायंकाले ---------- करोमि।
(२) अहं ---------- भोजनं न खादामि।
(३) सायंकाले अहं ---------- सह क्रीडामि।
(४) ---------- लाभप्रदम् भवति।
(५) मम माता दुग्धं ----------।

शब्दकोशः — सत्वरं =जल्दी, दन्तधावनं =दातुन या दाँत की सफाई, अल्पाहारं =जलपान, कृत्वा =करके, गच्छामि =जाता हूँ, छात्रैः सह =छात्रों के साथ, पूर्णविकाशानन्तरं =पूरी छुट्टी के बाद, क्रीडनं =खेलना, शरीराय =शरीर के लिए, स्मरामि =याद करता हूँ, तदनन्तरं = बाद में, स्वाध्यायं =पढ़ाई-लिखाई, पीत्वा =पीकर, शयनं = सोना।

आलोकः— पदान्त (वाक्य के अन्त) में अनुस्वार आने पर अनुस्वर को 'म्' लिखा जाता है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

पञ्चमः पाठः

मम विद्यालयः

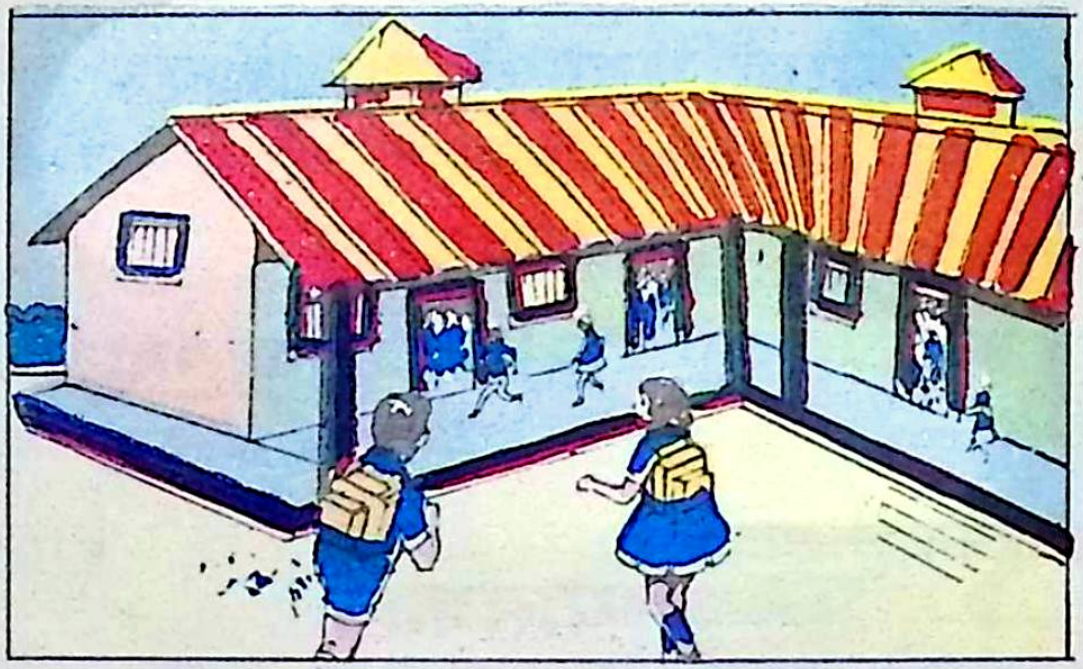

मोहनः — मित्र ! त्वं कुत्र गच्छसि ?

श्यामः — मित्र ! अहं विद्यालयं गच्छामि।

मोहनः — तव विद्यालयस्य किं नाम ?

श्यामः — मम विद्यालयस्य नाम "सरस्वती शिशु मन्दिरं" अस्ति।

मोहनः — त्वं कस्यां कक्षायां पठसि ?

श्यामः — अहं तृतीय कक्षायां पठामि।

मोहनः — तव विद्यालयः कुत्र अस्ति ?

श्यामः — मम विद्यालयः नगरमध्ये अस्ति। तव विद्यालयः कुत्र अस्ति ?

मोहनः — मम विद्यालयः नगरस्य समीपे अस्ति। मम विद्यालये तु रमणीयं उद्यानं विशालं भवनं च अस्ति।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्यामः — मम विद्यालये अपि एतत् सर्वम् अस्ति। अपि च उत्तमाः आचार्याः सन्ति ये छात्रेषु सद्गुणान् वर्धयन्ति। अत्र छात्राः देशभक्ताः भवन्ति। धर्मप्रवृत्ताः भवन्ति। सच्चरित्राःच भवन्ति।

बोधपरीक्षण — कक्षाकार्य

आचार्य जी निम्नलिखित शब्दों के आधार पर अपने विद्यालय पर भैय्या-बहिनों से सरल संस्कृत वाक्य बनवाएँ।

विद्यालयस्य नाम, सन्निकटे, भवनं, उद्यानम्, पुस्तकालयः, प्रयोगशाला, क्रीडाक्षेत्रम्।

अभ्यासकार्य

(१) (क) मम विद्यालयस्य नाम ---------- अस्ति।

(ख) मम विद्यालये आचार्याः ---------- वर्धयन्ति।

(२) अपने विद्यालय की विशेषताओं पर पाँच वाक्य लिखिए

शब्दकोशः — कुत्र = कहाँ, कस्यां = किसमें, कक्षायां = कक्षा में, मध्ये = बीच में, रमणीयम् = सुन्दर, उत्तमाः = श्रेष्ठ, सद्गुणान् = सद्गुणों को, वर्धयन्ति = बढ़ाते हैं, धर्मप्रवृत्ताः = धार्मिक

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

षष्ठः पाठः

क्रीडाक्षेत्रम्

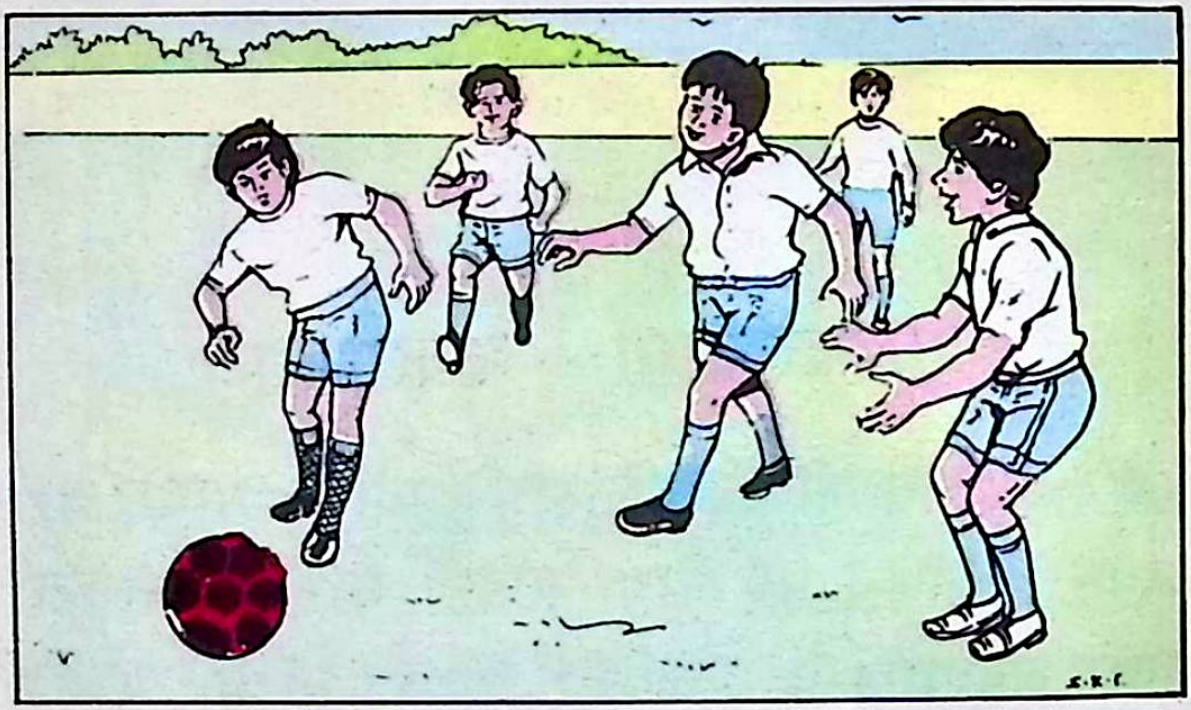

एतत् क्रीडाक्षेत्रम्।

मम विद्यालये विस्तीर्णं क्रीडाक्षेत्रं अस्ति। तत्र छात्राः कन्दुकेन खेलन्ति। अहं अपि मित्रैः सह कन्दुकेन खेलामि। मम विद्यालये विविधानां क्रीडानां प्रबन्धः अस्ति। प्रायः अहं पादकन्दुकेन क्रीडामि। परन्तु मम मित्राणि हस्तकन्दुकेन क्रीडन्ति। यदा विद्यालये अवकाशः भवति, तदा सर्वे छात्राः तत्र क्रीडन्ति। "पादकन्दुकक्रीडा" मम प्रियक्रीडा अस्ति। क्रीडनेन शरीरं स्वस्थं पुष्टं च भवति। स्वस्थः जनः सर्वं कार्यं करोति। पुष्टः जनः भयरहितः भवति। अतः स्वास्थ्याय खेलनं आवश्यकम्।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बोधपरीक्षण — कक्षाकार्य

निम्न चित्र को देखकर पाँच वाक्य बनाइये —

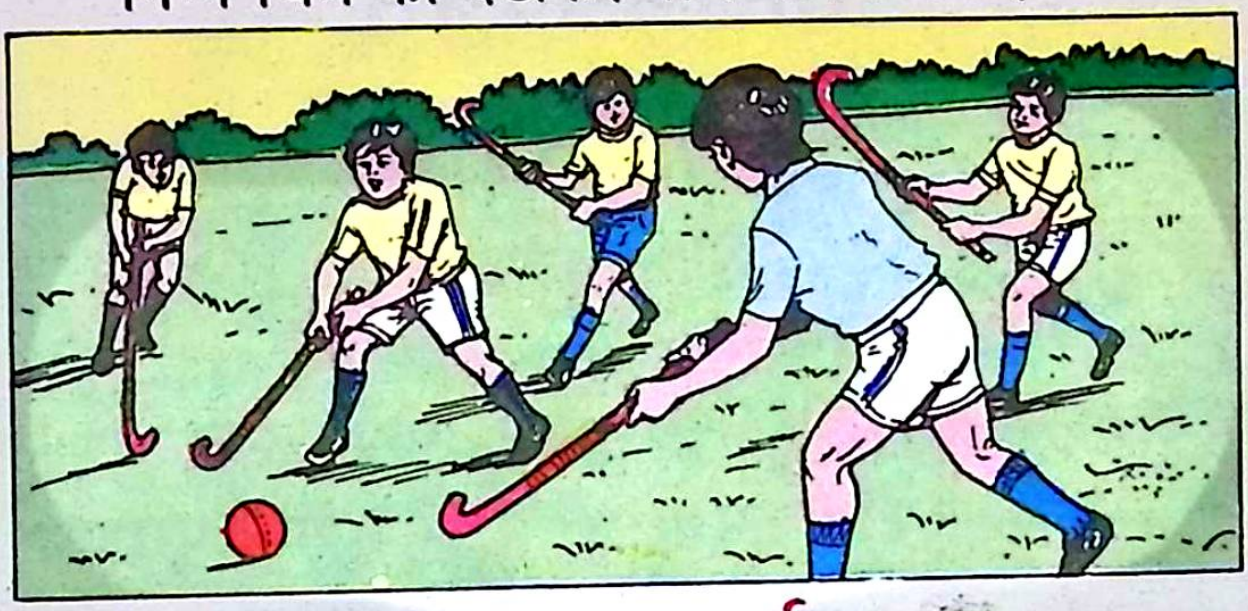

अभ्यासकार्य

(१) निम्न प्रश्नों का उत्तर लिखिए और मातृभाषा में अनुवाद लिखिये।

(क) त्वं कदा खेलसि ? (ग) त्वं किं खेलसि ?

(ख) क्रीडनेन के लाभाः सन्ति ?

(२) रिक्त पूर्ति कीजिएः —

(क) अहं सायंकाले _____ खेलामि।

(ख) त्वं प्रातःकाले _____ खेलसि।

शब्दकोशः — क्रीडाक्षेत्रम् =खेल का मैदान, तत्र =वहाँ, कन्दुकेन =गेंद से, मित्रैः सह =मित्रोंके साथ, क्रीडानां = खेलों का, प्रायः = अक्सर, पादकन्दुकेन =फुटबाल से, मित्राणि =मित्र, हस्तकन्दुकेन =वालीबाल से, सह = साथ, क्रीडनेन =खेलने से, पुष्टं =तगड़ा, खेलनं = खेलना।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust. Foundation, Delhi and eGangotri.

सप्तमः पाठः

कालियमर्दनम्

॥गीतम्॥

कन्दुकेन खेलनम्,
सर्वबालरंजकम्।
पादजानुहस्तनेत्र,
कौशलस्य वर्धकम्॥

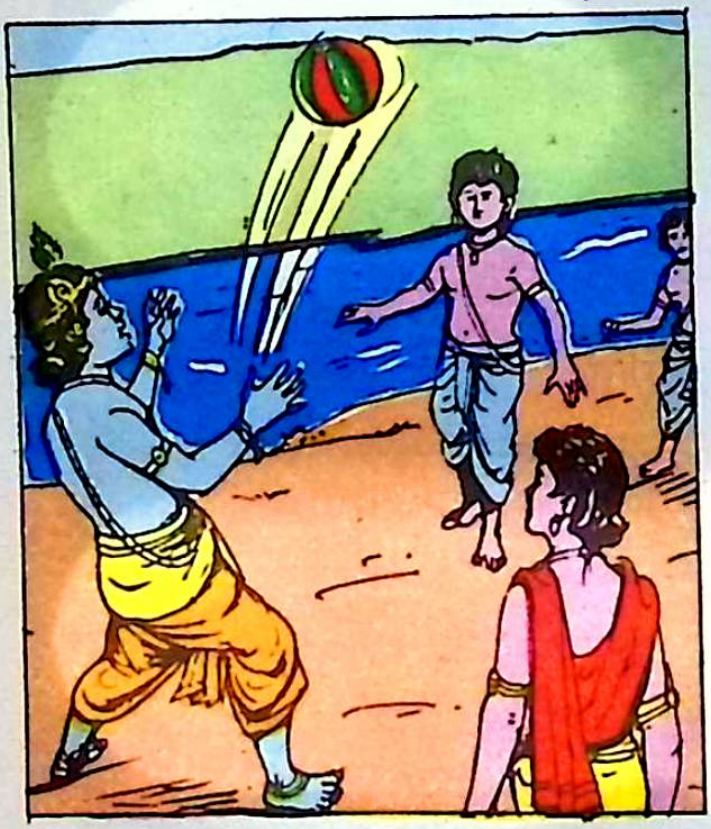

कृष्णगोपबालकाः
नदीतटे पुरा यथा।
खेलनेन मित्रतां,
लभामहे वयं तथा॥

केशवेन कालियः
मर्दितस्तथाऽनया।
कलहकालियं वयं,
मर्दयेम क्रीडया॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बोधपरीक्षण – कक्षाकार्य

सभी छात्र मिलकर सस्वर उच्चारण करें।

अभ्यासकार्य

(१) इस गीत को सस्वर कण्ठस्थ कीजिए।

(२) इसी प्रकार श्रीकृष्ण से सम्बन्धित अन्य घटना का चित्र बनाइये।

शब्दकोशः – रंजकम् =मनोरंजन करने वाला, पाद =पैर, जानु =घुटना, हस्त =हाथ, नेत्र =आँख, कौशलस्य = कुशलता का, वर्धकम् = बढ़ाने वाला, पुरा =पहले, यथा =जैसे, लभामहे =प्राप्त करते हैं, तथा =वैसे, मर्दितः =मसल दिया, अनया = इससे, क्रीडया =खेल से, मर्दयेम =मसलें या मसलते हैं।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अष्टमः पाठः

जलचराः

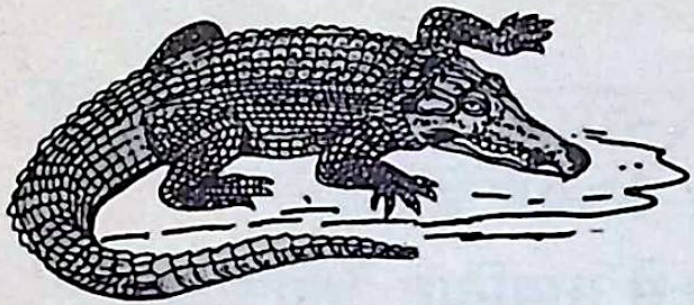

अयम् मकरः। मकरस्य वर्णः कृष्णः भवति।
मकरः जले वसति। मकरः शनैः शनैः चलति।
अयं जलचराणां राजा अस्ति।

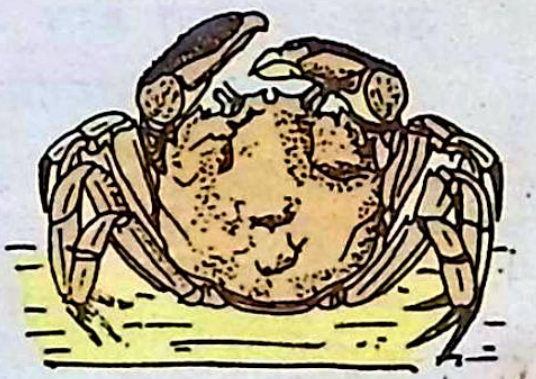

अयं कर्कटः। कर्कटः सरोवरे वसति।
कर्कटः कीटान् खादति।
बकः कर्कटान् भक्षयति।

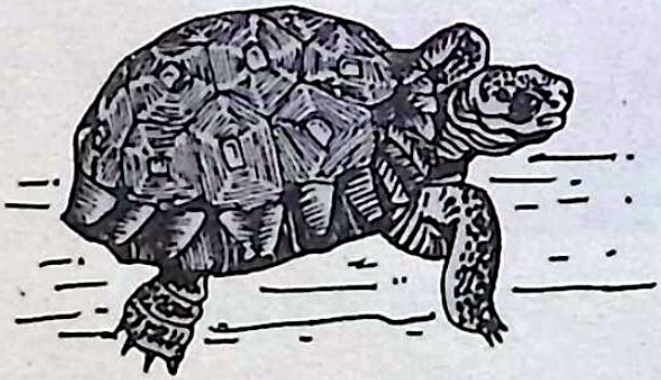

अयं कच्छपः। कच्छपस्य पृष्ठम् कठिनं भवति।
कच्छपः तडागे नदे च भवति।
कच्छपः मन्दं-मन्दं चलति। अयं अंगानि संहरति ।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

बोधपरीक्षण — कक्षाकार्य

निम्नलिखित जलचरों के विषय में चार-चार वाक्य बनाइये।

मत्स्यः। **मण्डूकः।**

अभ्यासकार्य

निम्न शब्दों को परस्पर जोड़ते हुए सार्थक वाक्य बनाइये एवं मातृभाषा में अनुवाद लिखिए।

कर्कटः	तरति	जले
मण्डूकः	संहरति	कीटान्
मकरः	भवति	अंगानि
कच्छपः	खादति	जलाशये
मत्स्यः	चलति	मन्दम्

शब्दकोशः — *मकरः* = मगरमच्छ, *वर्णः* = रंग, *कृष्णः* = काला, *वसति* = रहता है, *शनैःशनैः* = धीरे-धीरे, *जलचराणां* = जल के जीवों का, *कच्छपः* = कछुआ, *पृष्ठम्* = पीठ, *दृढ़ं* = कठोर, *तडागे* = तालाब में, *नदे* = बड़ी नदी में *च* = और, *मन्दं-मन्दं* = धीरे-धीरे, *भवति* = होता हैं, *अंगानि* = अंगों को, *संहरति* = समेटता है। *कर्कटः* = केकड़ा, *सरोवरे* = तालाब में, *कीटान्* = कीड़ों को, *भक्षयति* = खाता है। *बकः* = बगुला, *मत्स्यः* = मछली, *मण्डूकः* = मेंढक, *जलौकाः* = जोंकें।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नवमः पाठः

अस्माकं देशः

इदं मम देशस्य मानचित्रम्।

मम देशस्य नाम भारतवर्षम् अस्ति। आर्यावर्तः, जम्बूद्वीपः, हिन्दुस्थानं च अस्य अन्यानि नामानि सन्ति जनाः। भरतस्य नाम्ना अस्माकं देशं भारतवर्षं कथयन्ति। भारतस्य उत्तरदिशायां पर्वतराजः हिमालयः अस्ति। यः प्रहरी इव भारतं रक्षति। हिमस्य आलयः हिमालयः पर्वतः। हिमालयात् अनेकाः नद्यः वहन्ति। तासु नदीषु गंगा पवित्रतमा नदी अस्ति। अस्माकं देशे अनेकानि तीर्थस्थानानि सन्ति।

भारतस्य दक्षिणदिशायां "हिन्दु-महासागरः" अस्ति। अयं अपि भारतस्य रक्षां करोति। पूर्वदिशायां "ब्रह्मदेशः" पश्चिम दिशायां च "पाकिस्तान देशः"

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust. Foundation Delhi and eGangotri

अस्ति। "ब्रह्मदेशः", "पाकिस्तानदेशः", "बंगलादेशः" च पुरा अस्माकं देशस्य अंगानि आसन्। धन्यः एतादृशः अस्माकं भारतदेशः।

बोधपरीक्षण—कक्षाकार्य

(क) अपने प्रदेश के विषय में पाँच वाक्य बनाइये।

(ख) निम्न प्रश्नों का उत्तर बताइयेः —

१. यमुना नदी कुतः निःसरति?

२. भारतस्य दक्षिणदिशायां कः देशः अस्ति?

३. भारते कः प्रमुखः धर्मः अस्ति?

४. उत्तरदिशायां कः देशः अस्ति?

अभ्यासकार्य

संस्कृत भाषा में अनुवाद करो।

(१) यह मेरा प्रदेश है। (२) भारत महान् देश है। (३) भारत के पूर्व में बंगलादेश है। (४) हमारे देश में अनेक प्रदेश हैं। (५) मैं भारत का रक्षक हूँ।

शब्दकोशः — इदं =यह, मानचित्रम् =नक्शा, अन्यानि नामानि =दूसरे नाम, कथयन्ति =कहा जाता है, यः =जो, प्रहरी = पहरेदार, इव =तरह, हिमस्य =बर्फ का, आलयः =घर या भण्डार, नद्यः =नदियाँ, वहन्ति =बहती हैं, तासु =उनमें, नदीषु =नदियों में, पवित्रतमा =सबसे पवित्र, ब्रह्मदेशः =बर्मादेश, आसन् =थे, एतादृशः =ऐसा, निःसरति = निकलती है।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust. Foundation Delhi and eGangotri.

दशमः पाठः

जलचक्रम्

एषः सागरः। सागरे विपुलं जलम्।
सागरस्य जलं क्षारम्।
सागरः सरितां पतिः अस्ति।

सागरः

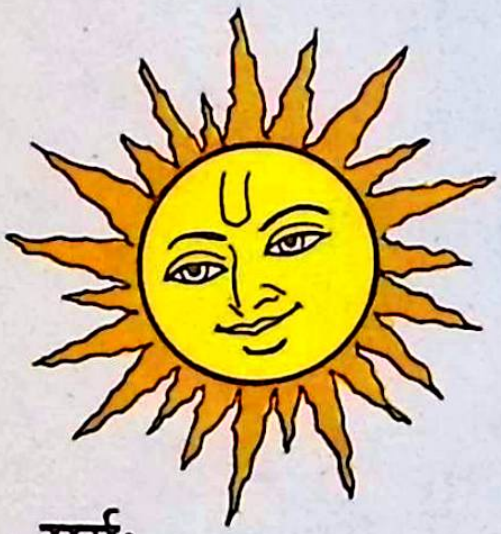

सूर्यः

एषः सूर्यः। सूर्यः तपति।
तापेन जलस्य वाष्पम् भवति।
सूर्यः सागरस्य जलं ओषति।

वायुः अदृश्यः।
वायुः वेगेन वहति।
वायुः मेघान् नुदति।

वायुः

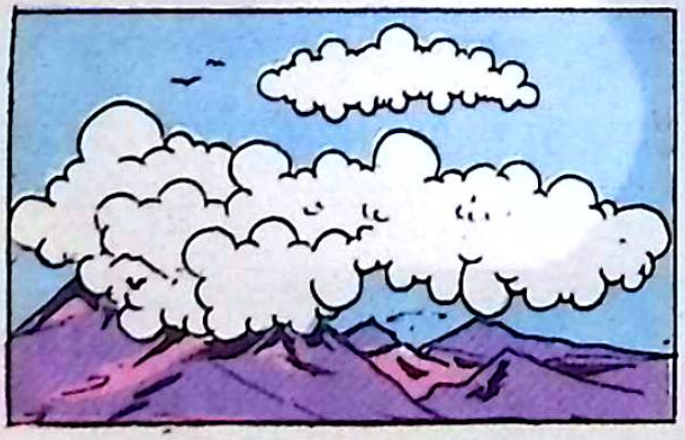

मेघः

मेघाः आकाशे संचरन्ति।
मेघाः पर्वते तटन्ति।
मेघाः उपरि गच्छन्ति।
मेघाः मधुरं जलं वर्षन्ति।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

नदी अधः वहति।
नद्यः सागरे मिलन्ति। सागरस्य
जलं पुनः सागरं गच्छति।
एतत् जलचक्रम्।

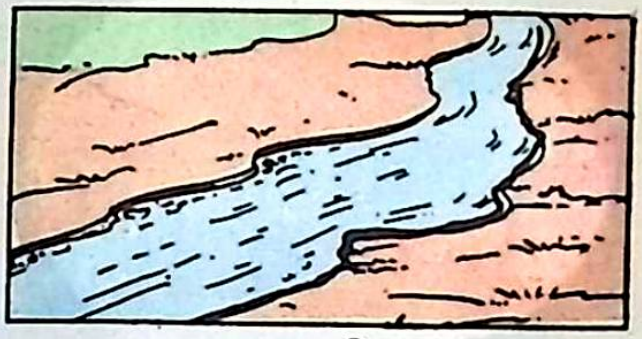

नदीः

बोधपरीक्षण — कक्षाकार्य

निम्न रिक्त स्थानों में योग्य शब्दों का प्रयोग कर पूरा करिये।

विपुलम्, क्षारम्, अल्पम्, मधुरम्।

(१) घटे ------ जलम्। (२) सागरे ------ जलम्।
(३) सागरे ------ जलम्। (४) घटे ------ जलम्।

अभ्यासकार्य

निम्न प्रश्नों का संस्कृत में उत्तर लिखिए और मातृभाषा में अनुवाद लिखिये –

(१) क्षारं जलं कुत्र भवति ?
(२) मेघाः कुत्र संचरन्ति ?
(३) मेघाः कुत्र तटन्ति ?
(४) कः वेगेन वहति?

शब्दकोशः – सागरः =समुद्र, विपुलं =बहुत अधिक, क्षारम् =खारा, सरितां पतिः =नदियों का राजा, तपति = तपता है, वाष्पम् =भाप, ओषति =सोखता है, वेगेन = तेजी से, वायुः =हवा, नुदति =ले जाता है, संचरन्ति = मँडराते हैं, तटन्ति =ठहरते हैं, उपरि =ऊपर, अधः = नीचे, नद्यः =नदियाँ, मिलन्ति =मिलती हैं, पुनः =फिर।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

एकादशः पाठः

निर्भयः भरतः

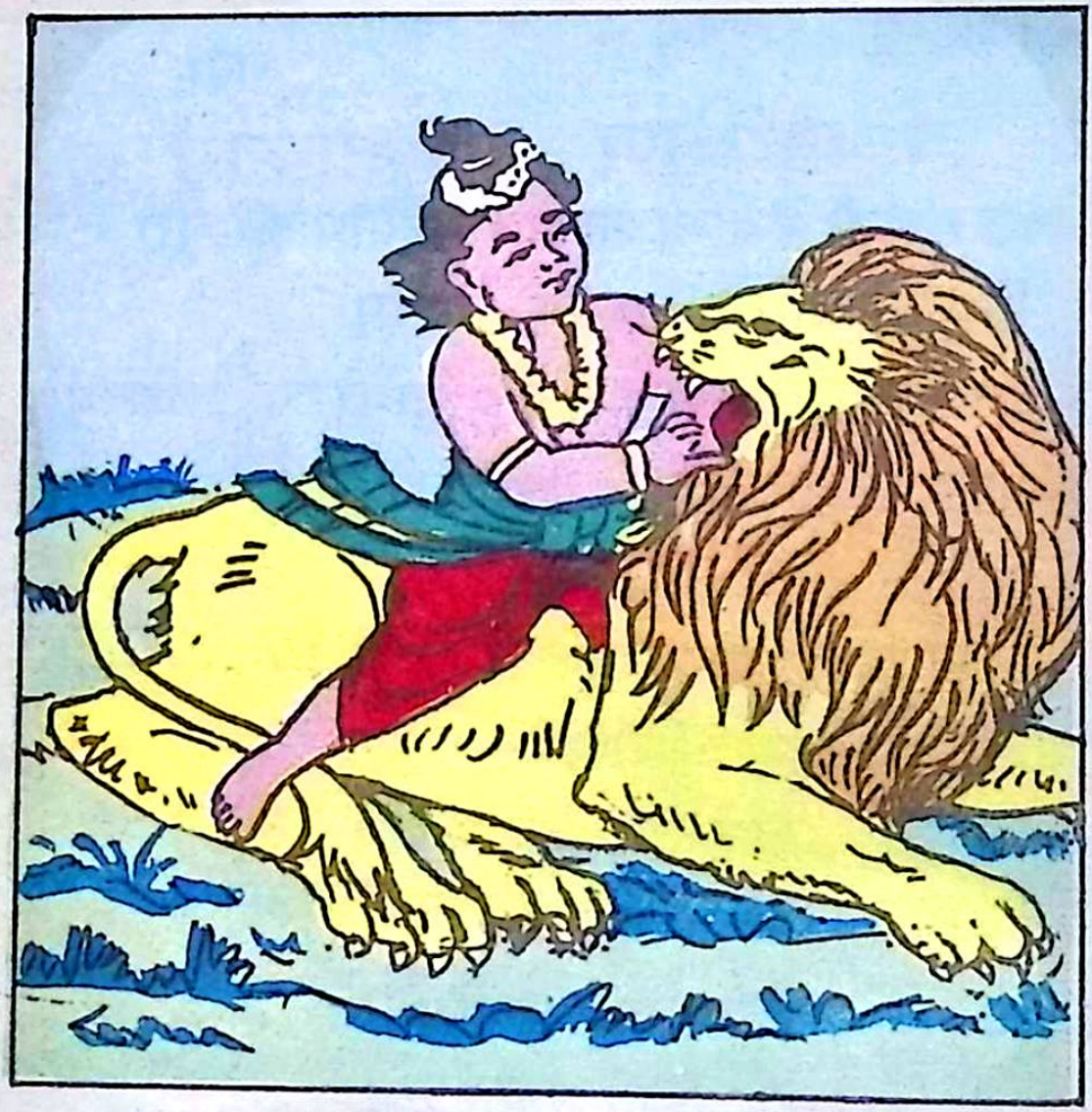

आचार्यः —कः एषः बालकः ?

गोपालः —एषः कुमारः भरतः।

सुस्मिता —एषः तु सिंहेन सह खेलति।

रोहितः —सः सिंहस्य दन्तान् गणयति।

सविता —भरतः अपि सिंहात् न त्रस्यति।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आचार्यः —आम्, एषः अतीव निर्भयः।

प्रवीणः —भरतः कस्य पुत्रः ?

सुधीरः —भरतः दुष्यन्तस्य पुत्रः।

छात्रः —का भरतस्य जननी ?

आचार्यः —शकुन्तला भरतस्य जननी। सा भरतं शिक्षयति। शिक्षया भरतः गुणयुक्तः भवति। सुसंस्कृतः भवति। निर्भयः भवति। शूरः भवति।

छात्राः —चित्रे बालं भरतं पश्यामः। अनन्तरं किं भवति ?

आचार्यः —युवकः भरतः सिंहासनम् आरोहति। देशस्य सम्राट् भवति। धर्मेण प्रजाः पालयति। न्यायेन प्रजाः पालयति।

सर्वे छात्राः —वयम् अपि भरतसमाः भवाम।

बोधपरीक्षण — कक्षाकार्य

संस्कृत में उत्तर दीजिए: —

(१) कः भरतस्य तातः ?

(२) भरतः कथं गुणयुक्तः भवति ?

(३) शकुन्तला का अस्ति ?

(४) भरतः प्रजाः कथं पालयति ?

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

अभ्यासकार्यं

(क) निम्न वाक्यों में "भरतः" के स्थान पर 'अहं' का प्रयोग करके वाक्य परिवर्तन कर लिखिए:—

(१) भरतः सिंहेन सह खेलति।

(२) भरतः सिंहासनं आरोहति।

(ख) मातृभाषा में अनुवाद लिखिए: —

भरतः शिक्षया गुणयुक्तः भवति। सुसंस्कृत भवति। निर्भयः भवति। शूरः भवति।

शब्दकोशः — *आम् = हाँ, सह = साथ, गणयति = गिनता है, त्रस्यति = डरता है, अतीव = बहुत, निर्भयः = निडर, का = कौन, जननी = माता, शिक्षयति = शिक्षा देती है, गुणयुक्तः = गुणवान्, सुसंस्कृतः = सभ्य, शूरः = वीर, पश्यामः = देखते हैं, अनन्तरं = बाद में, आरोहति = बैठता है, सम्राट् = राजा, धर्मेण = धर्म के अनुसार, पालयति = पालन करता है, न्यायेन = न्याय से, भरतसमाः = भरत के समान, भवाम = बनें।*

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

द्वादशः पाठः

बुद्धिबलम्

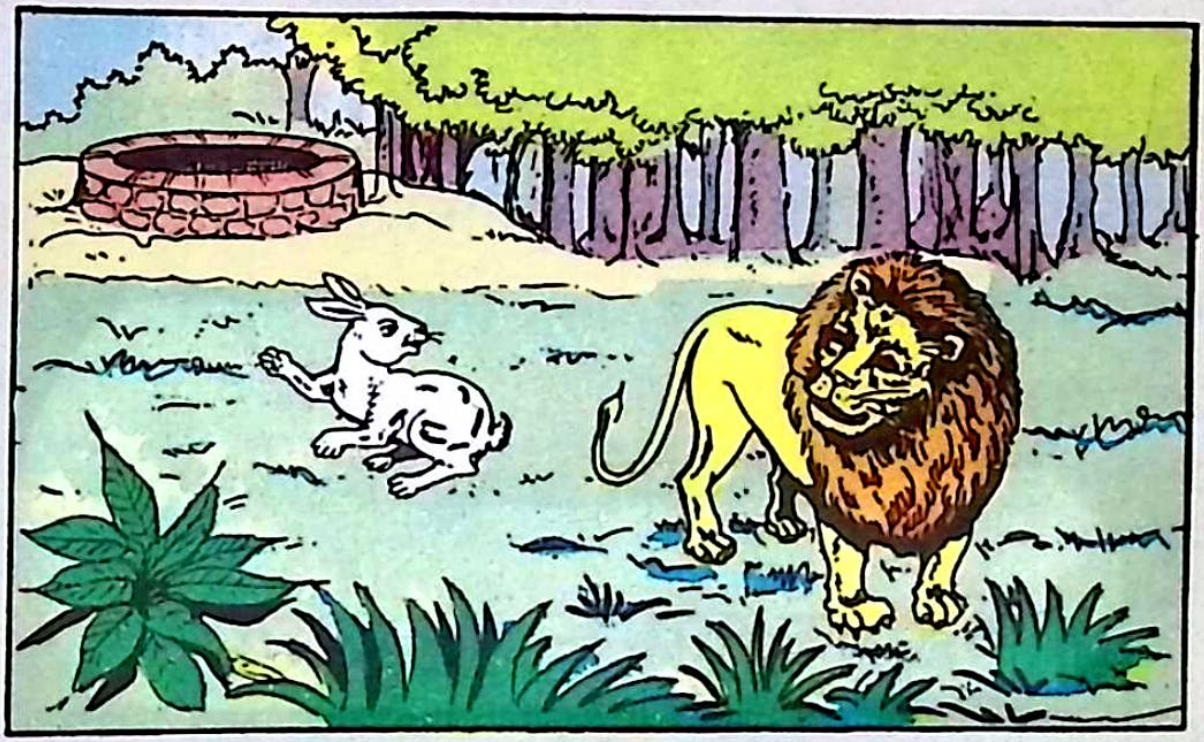

एकस्मिन् वने एकः सिंहः अवसत्। सः निर्दयः आसीत्। सः नित्यं एकम् पशुम् खादति स्म। एकदा सिंहः अति क्षुधितः आसीत्। तत्र एकः शशकः आगच्छत्। सः अति चतुरः आसीत्। शशकः सिंहं अपश्यत्। सः भीतः। अतः विलापं अकरोत्। सिंहः तम् अपृच्छत्—त्वं कथं विलपसि?

शशकः अवदत् — महाराज ! वने एकः अन्यः सिंहः अस्ति। सः मम पुत्रान् अखादत्। अतः अहं

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

विलपामि। सिंहः अवदत्—कुत्र अस्ति सः अन्यः सिंहः?

शशकः अकथयत्—समीपे एव एकः कूपः अस्ति। सः तस्मिन् निवसति।

क्रुद्धः सिंहः अकथयत्—अहं तत्र गत्वा पश्यामि। शशकः— अवदत्—"महाराज ! आगच्छ ।" शशकः सिंहम् कूपसमीपं अनयत्। सिंहः कूपस्य जले स्वप्रतिबिम्बं अपश्यत्। तं हन्तुं सः कूपे अकूर्दत् मृतः च।

शशकः स्वबुद्धिबलेन आत्मरक्षां अकरोत्।

बोधपरीक्षण — कक्षाकार्य

"शशककच्छपयोः कथा" शीर्षक पर एक लघुकथा कहिए।

अभ्यासकार्य

निम्न प्रश्नों का संस्कृत में उत्तर लिखकर मातृभाषा में अनुवाद लिखिए —

(१) पशूनां राजा कः भवति ?

(२) सिंहः किं अकरोत् ?

(३) शशकः कीदृशः आसीत् ?

(४) सिंह हन्तुं शशकः कि अकरोत् ?

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

शब्दकोशः – एकस्मिन् = एक, अवसत् = रहता था, आसीत् = था, एकदा = एक बार, क्षुधितः = भूखा, आगच्छत् = आया, अपश्यत् = देखा, शशकः = खरगोश, भीतः = डर गया, विलापं = रोना, अकरोत् = करने लगा। तम् = उससे, अपृच्छत् = पूछा, अन्यः = दूसरा, मम = मेरा, पुत्रान् = पुत्रों को, कुत्र = कहाँ, अवदत् = बोला, कूपः = कुँआ, तस्मिन् = उसमें, क्रुद्धः = गुस्से में आया हुआ, गच्छामि = जाता हूँ, पश्यामि = देखता हूँ, आगच्छतु = आओ, समीपं = पास में, स्वप्रतिबिम्बम् = अपनी परछाई, हन्तुम् = मारने के लिए, अकूर्दत = कूद गया, च = और, आत्मरक्षाम् = अपनी रक्षा, शशककच्छपयोः कथा = खरगोश और कछुए की कहानी।

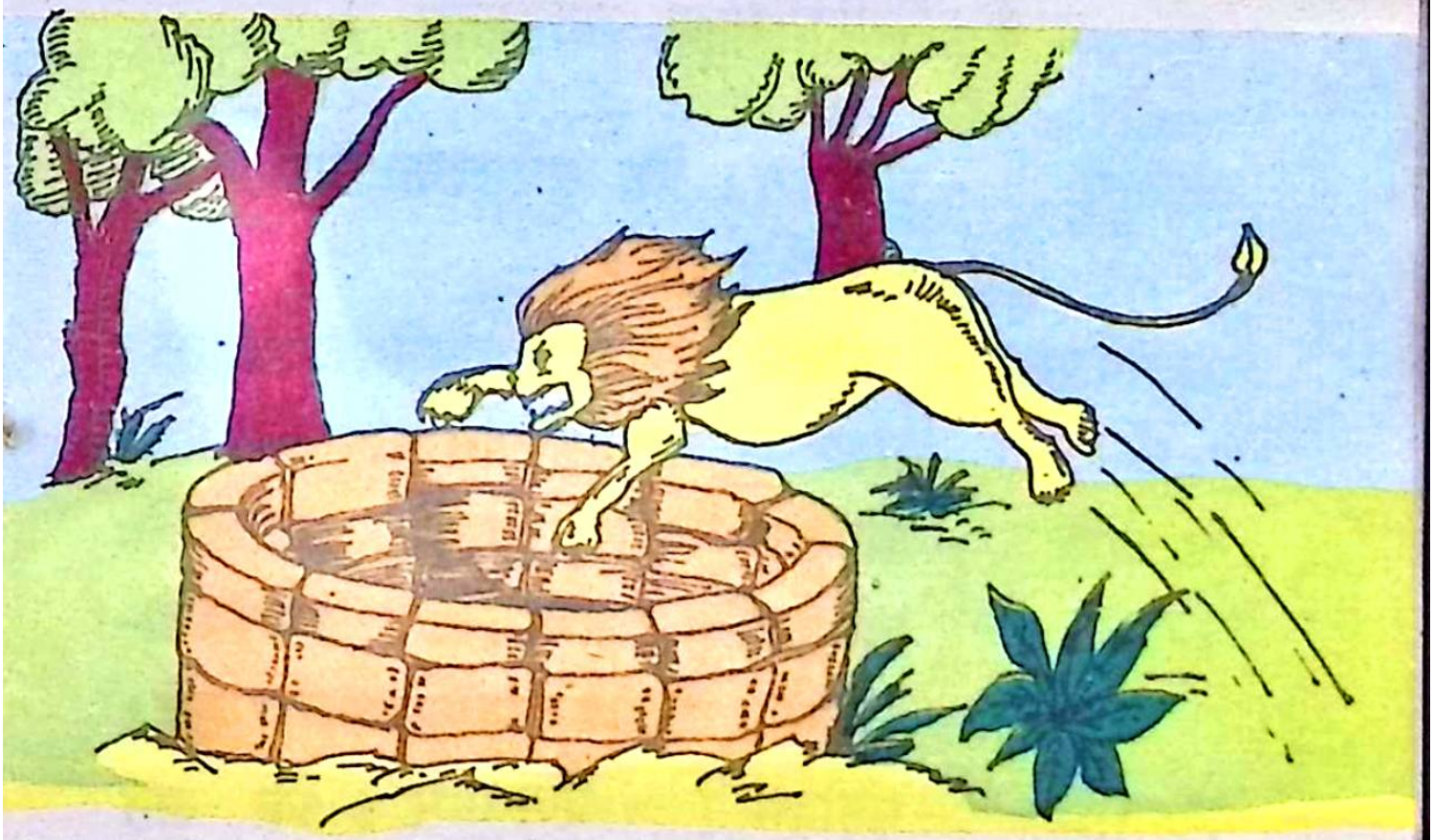

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

त्रयोदशः पाठः

कक्षा शिष्टाचारः

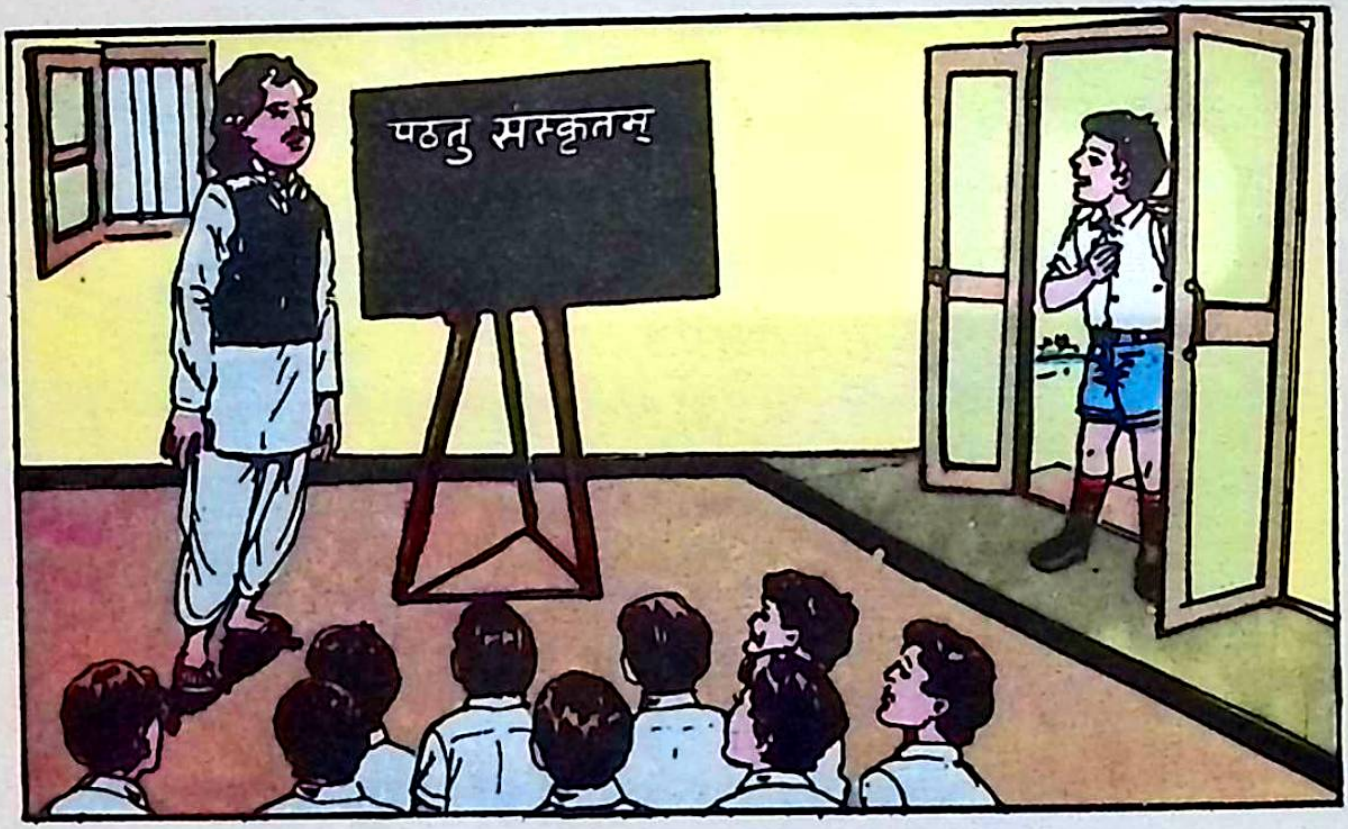

(आचार्यः प्रविशति। छात्राः उत्तिष्ठन्ति।)

आचार्यः —उपविश। किं सर्वेछात्राः उपस्थिताः सन्ति ?

कक्षाप्रमुखः —महोदय ! रमेशः अनुपस्थितः अस्ति। तस्य गृहे अद्य देवपूजनं भविष्यति।

आचार्यः —शोभनम् ! इदानीं उपस्थितिः भविष्यति। "सर्वेछात्राः" उपस्थितोऽस्मि" इत्येव यथाक्रमं उच्चारयन्तु।

विशालः —महोदय ! प्रणमामि। किं अहं प्रविशेयम् ?

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

आचार्यः —आगच्छ विशाल ! चिरंजीव , कथं विलम्बेन आगच्छसि? न एतत् उचितम्।

विशालः —महोदय ! क्षम्यताम् ! इतः परं विलम्बः न भविष्यति।

आचार्यः —अद्य वयं कक्षायाः शिष्टाचार विषये पठिष्यामः ?

कक्षाप्रमुखः —महोदय ! कक्षायाः शिष्टाचार विषये किं आवश्यकम् ?

आचार्यः —विद्यालय आगमन समये आचार्याय नमनंकर्तव्यम्। कक्षायां कोलाहलः कदापि न कर्तव्यः।

राजीवः —महोदय ! किं अहं बहिर् गच्छेयम् ?

आचार्यः —गच्छ !अपिच, कक्षायां आज्ञां बिना कस्यापि वस्तु न स्वीकरणीयम्। कुत्रापि न गन्तव्यं च।

(क) उपस्थित एवं अनुपस्थित छात्रों के नामों पर वाक्य बनवाएँगें।जैसे :—

रमेशः उपस्थितः अस्ति। श्यामः अनुपस्थितः अस्ति।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

(ख) किसी भी छात्र को कक्षा से बाहर भेज कर अन्दर आने की आज्ञा संस्कृत में लेने का अभ्यास कराएँ। बाहर जाने की आज्ञा के लिए भी उसी प्रकार अभ्यास कराना चाहिए।

(ग) कक्षा में क्या-क्या करना चाहिए। उन वाक्यों को छात्रों से पाठ की सहायता से बुलवाना चाहिए।

(घ) तव्यत् एवं अनीयर् प्रत्ययों का प्रयोग चाहिए अर्थ में होता है। वाक्यों के माध्यम से अभ्यास करवायें।

अभ्यासकार्य

संस्कृत में अनुवाद करें—

(१) श्रीमान् क्या मैं आ सकता हूँ।

(२) श्रीमान् मैं उपस्थित हूँ।

(३) कक्षा में कभी भी कोलाहल नहीं करें।

शब्दकोश :—उपस्थितोऽस्मि = उपस्थित हूँ, यथाक्रमं = क्रमशः, इतः परं = अब से, बहिर् = बाहर, स्वीकरणीयम् = लेनी चाहिए, च = और, गन्तव्यम् = जाना चाहिए।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

चतुर्दशः पाठः

स्वावलम्बी विनयः

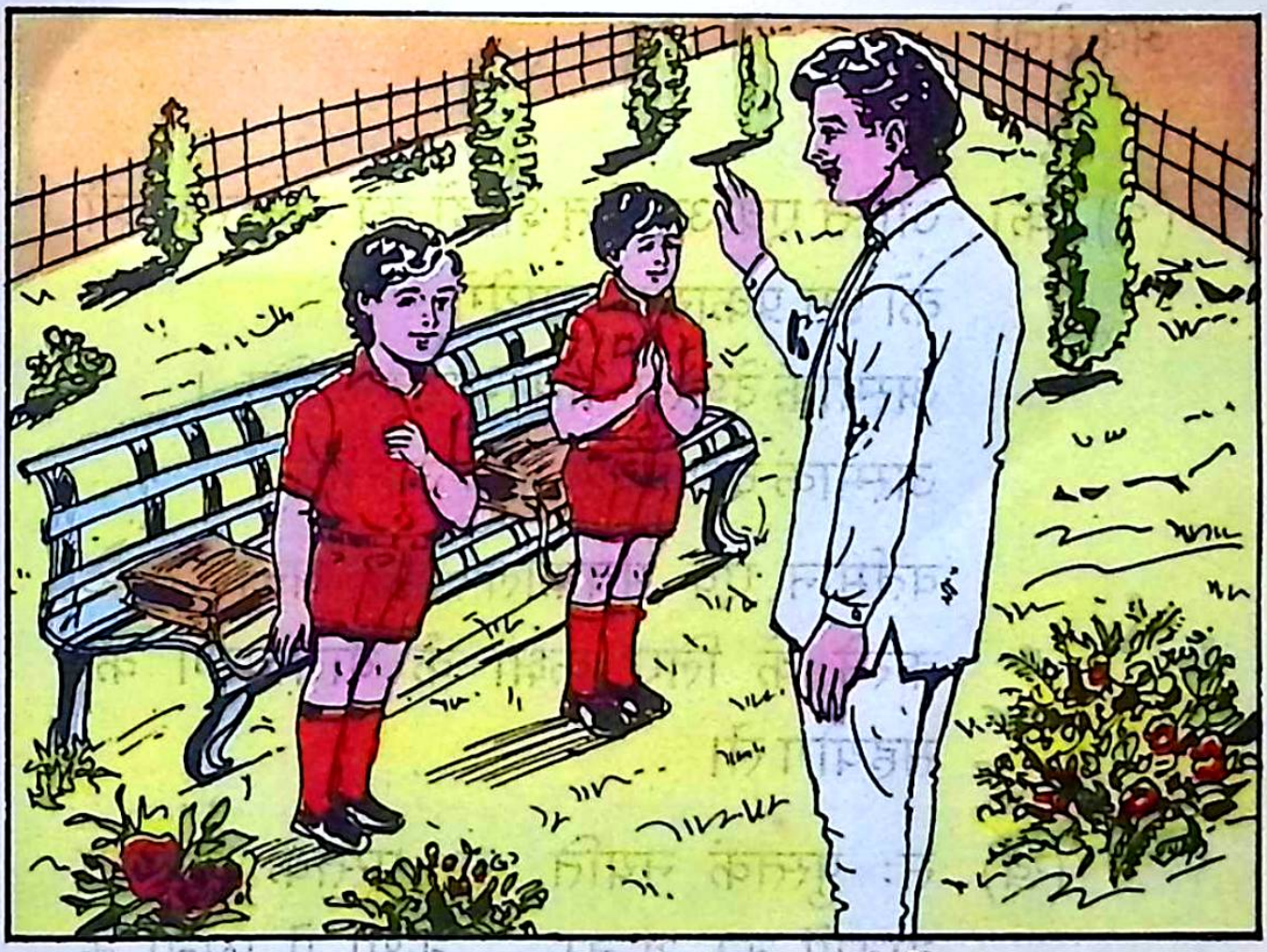

एकस्मिन् विद्यालये द्वौ मित्र-छात्रौ अपठताम्। तयोः एकः राघवः आसीत्। यः धनिकः आसीत्। अन्यः विनयः निर्धनः आसीत्। एकदा राघवेन विनयः स्वगृहे आमन्त्रित । सः तं उद्यानं अनयत्। उद्याने राघवेन विनयस्य निर्धनता प्रकटिता—सः 'अकथयत् यत् मम गृहे तु भृत्याः सन्ति। किन्तु तव गृहे न सन्ति। विनयः अवदत् मम गृहे अपि अष्टौभृत्याः सन्ति। ते च द्वौ पादौ, द्वौ हस्तौ, द्वे नेत्रे, द्वे

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

श्रोत्रेच, सदैव मदुक्तं कुर्वन्ति। अनेन कथनेन विनयः स्वावलम्बनस्य महत्वं प्राकटयत्। तस्य वार्तां श्रुत्वा राघवस्य पिता प्रसन्नो Sभवत्। तस्य अभिनन्दनं च अकरोत्।

(१) (क) अस्ति एवं आसीत् शब्दों का अन्तर छात्रों को इस प्रकार समझायेंगे –

अस्माकं देशस्य नाम भारतं अस्ति, ।

अस्माकं देशः विश्वगुरुः आसीत् ।

वर्तमान एवं भूतकाल का अन्तर स्पष्ट करने के लिए कक्षा के वातावरण का सहयोग लें।

(ख) सः पुस्तकं नयति, सः पुस्तकं अनयत् वाक्यों का अन्तर कक्षा में छात्रों के माध्यम से करें।

कहानी का सारांश मातृभाषा में लिखो।

शब्दकोशः—*स्वावलम्बी =आत्मनिर्भर, अपठताम् =पढ़ते थे, धनिकः = सेठ, अनयत् = ले गया, भृत्याः = नौकर (बहु व०), श्रोत्र =कान, मदुक्तं =मेरे कहे हुये को।*

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust. Foundation, Delhi and eGangotri.

पंचदशः पाठः

गणना

एकः बालकः

द्वौ बालकौ

त्रयः बालकाः

चत्वारः बालकाः

एका बालिका

द्वे बालिके

तिस्रः बालिकाः

चतस्रः बालिकाः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

एकम् पुस्तकम्

द्वे पुस्तके

त्रीणि पुस्तकानि

चत्वारि पुस्तकानि

शेष पञ्चम (पाँच) से आगे की संख्याओं के रूप तीनों लिंगों में समान रहते हैं।)

५. पञ्च	१३. त्रयोदश
६. षट्	१४. चतुर्दश
७. सप्त	१५. पञ्चदश
८. अष्ट	१६. षोडश
९. नव	१७. सप्तदश
१०. दश	१८. अष्टदश/अष्टादश
११. एकादश	१९. नवदश/एकोनविंशतिः
१२. द्वादश	२०. विंशतिः

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri

बोधपरीक्षण — कक्षाकार्य

१. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये :—

(क) ईश्वरः ---------- अस्ति।

(ख) वेदाः ---------- सन्ति।

(ग) सप्ताहे ---------- दिनानि भवन्ति।

(घ) वर्षे ---------- मासाः भवन्ति।

(ड़) हस्तस्य ---------- अंगुलिकाः सन्ति।

२. अन्यान्य वस्तुओं को दिखाते हुए उनका संख्यात्मक विवरण संस्कृत में कहलवाएं।

अभ्यास कार्य

१. निम्नलिखित वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद कीजिये :—

(क) संगीत में सात स्वर होते हैं।

(ख) दुर्गा अष्टभुजा देवी है।

(ग) मेरे दो नेत्र हैं।

(घ) पक्ष में पन्द्रह दिन होते हैं।

शब्दकोशः—मासे = महीने में, वर्षे = साल में, हस्ते = हाथ में। अंगुलिकाः = अंगुलियाँ, संगीते = संगीत में, पक्षे = पक्ष में।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

षोडशः पाठः

सुभाषितानि

आज्ञां मानय मान्यंजनानां,
आज्ञां मानय पूज्यजनानाम् ।
आज्ञां मानय ज्येष्ठजनानाम्
आज्ञां मानय श्रेष्ठ जनानाम् ॥(१)॥

अभिवादनशीलस्य, नित्यं वृद्धोपसेविनः ।
चत्वारि तस्य वर्धन्ते, आयुर्विद्यायशोबलम् ॥(२)॥

नाभिषेको न संस्कारः, सिंहस्य क्रियते मृगैः ।
विक्रमार्जितराज्यस्य, स्वयमेव मृगेन्द्रता ॥(३)॥

सूक्तयः

विद्वान् सर्वत्र पूज्यते ।
दीर्घसूत्री विनश्यति ।
स्वाध्यायात् मा प्रमदः ।
गुणाः पूजास्थानम् ।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ।

टिप्पणीः — इन सुभाषितों, सूक्तियों को कण्ठस्थ कीजिए।

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection

Digitized by Sarayu Trust Foundation Delhi and eGangotri.

सरस्वती वन्दना

या कुन्देन्दुतुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता,
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशंकरप्रभृतिभिर् देवैः सदा वन्दिता,
सा मां पातु सरस्वती भगवती निःशेषजाड्यापहा॥

शुक्लां ब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीम्,
वीणा पुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्।
हस्ते स्फाटिकमालिकां विदधतीं पद्मासने संस्थिताम्,
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्॥

CC0. In Public Domain Kirtikant Sharma Najafgarh Delhi Collection